D. El. Ed 2nd Sem — 20 May 2020, Wednesday

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

जन्म – 5 सितम्बर सन् 1888 मद्रास से (40 मील दूर तिरुतनी) स्थान।
मृत्यु – 1975

राज्य सभा के सभापति / भारत के उपराष्ट्रपति पद — सन् 1952-1962
राष्ट्रपति पद पर आसीन → 1962

1 ⇒ महान लेखक तथा दार्शनिक → 'धर्म और समाज', 'शिक्षा', 'राजनीति और युद्ध ए कल्की' या 'सभ्यता का भविष्य', 'पूर्वी धर्म और पाश्चात्य दर्शन' महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ।

2 ⇒ मिशनरियों की आलोचनाओं से कष्ट → "ईसाई आलोचकों की चुनौती से विचलित होकर ही मैं हिन्दुत्व का विधिवत् अध्ययन करके यह पता लगाने को प्रस्तुत हुआ हूँ, कि हमारे धर्म का कितना अंश मृत और कितना अंश आज जीवित है।

3 ⇒ हिन्दू धर्म के प्रति श्रद्धा → "हिन्दू धर्म केवल भारतवासियों के लिए ही प्रेरणा का स्रोत नहीं वरन् वह विश्व को भी शान्ति और कल्याण का मार्ग दिखा सकता है।

4 ⇒ पूर्व और पश्चिम का समन्वय → "जिसमें पूर्वी और पश्चिमी दोनों ही दर्शनों के श्रेष्ठ तत्व समन्वित हो।"

5 ⇒ राजनीति का आध्यात्मीकरण — वे धर्म का प्रवेश जीवन के कुछ क्षेत्रों में ही नहीं, वरन् समस्त क्षेत्रों में करने के पक्षधर थे।

6 ⇒ विज्ञान के सम्बन्ध में विचार → "विज्ञान की विभिन्न उपलब्धियों के प्रति वे बड़े उत्साहित और आशावान थे।"

7 ⇒ स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में विचार → अपनी जन्मसिद्ध शारीरिक और मानसिक शक्तियों को पूर्ण रूप से प्रयोग करना, यही वास्तविक और भावात्मक स्वतन्त्रता है।

(8) ⇒ मानवतावादी दर्शन — राष्ट्रवादी विचारधारा से ऊपर उठकर मानवतावादी विचारधारा का प्रतिपादन। मानव यदि मानव से घृणा करता है तो ईश्वर से भी घृणा।

(9) ⇒ विश्वशान्ति के समर्थन में विचार ⇒ राष्ट्रों के पारस्परिक व्यवहार अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों पर आधारित होने चाहिए। विश्व सरकार का समर्थन किया। — End